International Journal of Information Movement *Vol. 9 Issue IX* *(January 2025)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 18-22**

आंदोलन स्वाधीनता और सुभद्रा कुमारी चौहान : एक विचार

सुमित रंगा
Email- id dr.sumit1585@gmail.com

अवधारणा: स्वाधीनता आंदोलन भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ हुआ एक व्यापक और लंबा संघर्ष था जिसमें भारतीयों ने अपनी स्वतंत्रता और आत्म निर्णय के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी।

स्वाधीनता शब्द 'स्वाधीन'शब्द में 'ता' प्रत्यय जुड़ने से बना है। 'स्वाधीन' शब्द स्व +अधीन से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है अपने अधीन होना अर्थात अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता होना। यह निर्णय किसी भी व्यक्ति, समाज अथवा देश द्वारा अपनी प्रतिष्ठा, प्रगति अथवा संप्रभुता के लिए,लिए जा सकते हैं।

यह आंदोलन 19वीं शताब्दी के मध्य में शुरू हुआ और 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के साथ समाप्त हुआ इस आंदोलन में कई महत्वपूर्ण या अहम घटनाएं ,आंदोलन और व्यक्तित्वों का योगदान रहा जिनमें से एक प्रमुख नाम है: **सुभद्रा कुमारी चौहान।**

बीज शब्द: स्वतंत्रता आंदोलन,1857 की क्रान्ति, अंग्रेजों की दमनकारी नीति।

1.0 मूल पाठ:

सुभद्रा कुमारी चौहान की साहित्य सृजन में अभिरुचि पांच–छह वर्ष की अवस्था में दृष्टिगत होने लगी थी ,और नौ वर्षीय सुभद्रा कुमारी चौहान की **'नीम'** नामक **प्रथम कविता** उस समय की प्रसिद्ध **पत्रिका 'मर्यादा'** में प्रकाशित हो गई थी। वह जन्मजात कवयित्री थी।उनके भाई ठाकुर राज बहादुर सिंह के शब्दों में "**सुभद्रा अत्यंत शीघ्र कविता लिख डालती,गोया उसको कोई प्रयास ही नहीं करना पड़ता।**"1.

इसके पश्चात उनकी कविताएं उस समय की प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं **'प्रभा' 'प्रताप'** आदि में प्रकाशित होने लगी 'मुकुल' की कविताएं राष्ट्र प्रेम, दांपत्य प्रेम, और मातृत्व से ओतप्रोत है।'मुकुल' में उनकी भावनाओं

की उन्मुक्त अभिव्यक्ति को देखकर डॉ. 'रामकुमार वर्मा' ने **"उन्हें हिंदी साहित्य की कोकिला नाम से विभूषित किया है जो भावना की ऊंची डाल पर बैठकर गाती है।"**2.

अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों में उनके बनाए गए कानूनों का शिकार हो चुके भारतीयों और रूढ़ियों से बंधा हुआ भारतीय समाज निरीह दशा को प्राप्त, वंचित तथा उपेक्षितों की दुर्दशा से आहत होकर उनकी स्थिति में सुधार करने और उन्हें स्वाधीन कराने के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं में भी राष्ट्रीयता की भावना को उजागर किया, उन्होंने नौजवानों की सुप्त आत्मा को जगाया, उन में कर्तव्य बोध जागृत किया तथा देश के गौरव तथा सम्मान की रक्षा के लिए त्याग और बलिदान की भावना से प्रेरित किया। स्वाधीनता आंदोलन के समय राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत उनकी कविताएं भारत के लोगों के लिए गीता के उपदेश की तरह थी।"**मां की बेड़ियों की झंकार, संतानों की विवशता, समाज के निष्ठुर बंधनों में तड़प उठने वाले असहाय उपेक्षितों की आहें,सुभद्रा जी को संघर्ष में खींच लाई,और उनकी यशस्विनी शक्तियां मध्यप्रांत और हिंदी संसार के घर आंगन में पूजा, आदर और प्यार की वस्तु बन गई।"**3.

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं संपूर्ण भारत में एक नई ऊर्जा व क्रांति का काम कर रही थी। उनकी राष्ट्रीय कविताओं और स्वाधीनता आंदोलन में उनके सक्रिय सहयोग ने उन्हें समस्त देशवासियों के लिए श्रद्धा और सम्मान का पत्र बना दिया था। उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय भावना को उड़ेल कर रख दिया है। राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत तथा तेज और ओज से युक्त '**झांसी की रानी**' से राष्ट्रीय काव्य का शुभारंभ करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान ने '**जलियांवाला बाग में बसंत**', '**राखी की चुनौती**', '**व्यथित हृदय**', '**विजय दशमी**' आदि एक से बढ़कर एक आग्नेय राष्ट्रीय कविताओं की रचना की। झांसी की रानी कविता में भी लिखती हैं:

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी, चमक उठी सन् सतावन में वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झांसी वाली रानी थी।"4.

जलियांवाला बाग में बसंत कविता में वे लिखती हैं:

"परिमल हीन पराग दाग सा बना पड़ा है

हा!यह प्यारा बाग ख़ून से सना पड़ा है

आओ प्रिय ऋतुराज!किन्तु धीरे से आना यह है शोक स्थल यहां शोर मत मचाना।"5.

वह स्वाधीनता आंदोलन में सहयोग के लिए गांव-गांव घूमती थी **"साक्षात ज्वालामुखी का रूप धारण कर कवयित्री के हृदय से जैसे लावा बह निकला, वीरों का कैसा हो बसंत, लोहे को पानी कर देना आदि गीत गाते–गुनगुनाते जीवन का वसंत राष्ट्र को समर्पित हो गया।"**6.

कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सुभद्रा कुमारी चौहान के सहज, स्नेही स्वभाव है अप्रतिम साहस औरओजस्वी राष्ट्रीय काव्य को ध्यान में रखते हुए देश और साहित्य के लिए किए गए उनके अविस्मरणीय योगदान के संबंध में कहा है,**"वह हमारे भावना के भारत की 'पहली बसंत पंचमी' भारतीय आंदोलन की वीर स्त्रियों में पहली सत्याग्रही और हिंदी भारत की पहली कोकिला थी जिनकी स्वर लहरियां 'चकबसंत' और 'इंकलाब' के राष्ट्रीय तरानों के साथ हमेशा–हमेशा के लिए जन–मन–गण में घुल–मिल गई है।"**7.

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने तेज और शौर्य से युक्त कविता 'झांसी की रानी' और अन्य राष्ट्रीय कविताओं से आधुनिक युग में भूषण और चंदबरदाई की भूमिका निभाई है तथा देश की स्वाधीनता के लिए अडिग रहकर देश को स्वाधीन करने के झांसी की रानी के कृतसंकल्प को पूर्ण करने हेतु अथक प्रयास किए हैं,**"भूषण और कवि चंद के अभाव की पूर्ति तो सुभद्रा ने अपनी और ओजस्विनी वाणी में इतने प्रभावात्मक ढंग से की है जिसे सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो गए और आज सुभद्रा से तात्पर्य है देश प्रेम की उमंग से भरी हुई उस वीर बाला से जो भारत माता की युगों की दासता की श्रृंखलाओं को तोड़ने के लिए अपनी वीर हुंकार से जनता को उत्साहित करने के साथ-साथ स्वयं भी रानी लक्ष्मीबाई के पावन संकल्प को पूर्ण करने में तत्पर दिखाई देती है।"**8

सुभद्रा कुमारी चौहान के रग–रग में देश प्रेम था उनका राष्ट्र प्रेम उन्हें हर क्षण राष्ट्र के प्रति त्याग व समर्पण और राष्ट्र हित में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित करता था। इन्होंने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को काव्यात्मक रूप देने के लिए उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में अपूर्व योगदान दिया। सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय भावना में सभी के लिए पर्याप्त स्थान था। वह एक स्वाधीनता सेनानी थी। अतःदेश की स्वाधीनता के लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयास से अपने को दूर रखना उनके लिए संभव नहीं था। इसलिए उसके साथियों के समझाने के बावजूद भी वह देश प्रेम के प्रवाह में अपनी राष्ट्रीय कर्तव्य के निर्वाह से अपने को रोक न सकी।

2.0 उपसंहार

अतः सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। वह देश भर में राष्ट्रीय कवयित्री और स्वाधीनता सेनानी के रूप में प्रसिद्ध थी। इसके अतिरिक्त वे समाज सेविका, जनहितैषी कार्यकर्ता, और जन प्रतिबद्ध नेत्री भी थी। संपूर्ण देशवासियों के मन में उनके प्रति स्नेह व आदर की भावना थी। उन्होंने जन-जन में स्वाधीनता की चेतना जागृत करके स्वाधीनता आंदोलन में अविस्मरणीय योगदान दिया। उन्होंने अपने साहित्य को मानव स्वाधीनता का शस्त्र बनाया और उसे अपने जीवन में आत्मसात् करके कथनी और करनी के भेद को जड़ से मिटा दिया। उनका प्रेरणादायक व्यक्तित्व भारत के जन-जन के लिए युगों तक स्मरणीय रहेगा।

3.0 संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सावित्री भरतीया, सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना प्रकाशित शोध प्रबंध [पृष्ठ 23]

2. रामकुमार वर्मा, सिंहावलोकन (भूमिका) 'मुकुल' [पृष्ठ 24]

3. माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान 'समय के पांव' [पृष्ठ100]

4. सुभद्रा कुमारी चौहान, 'झांसी की रानी' [पृष्ठ 33]

5. सुभद्रा कुमारी चौहान, 'उन्मादिनी' [पृष्ठ 56]

6. डॉ.सुरेश गौतम 'राष्ट्रीयता की बलिवेदी पर हृदय की प्रखर वाणी': सुभद्रा कुमारी चौहान, 'महादेवी के बाद' [पृष्ठ 18]

7. शमशेर बहादुर सिंह, 'राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला' [पृष्ठ 47]

8. प्रो.उर्मिला भंडारी, सुभद्रा कुमारी की श्रृंगार भावना, बुंदेले हरबोलों के मुंह जिसने सुनी कहानी, (संपादक आचार्य ललिता प्रसाद) 'सुकुल' [पृष्ठ 42]